पहाड़ जैसा दुख भूल गई

• ब्रह्माकुमारी सती देवी वारियर, नेरुल, नई मुंबई

मेरी ज़िन्दगी दुखों से भरपूर थी। मैं अपने आपको दुनिया की सबसे दुखी इंसान समझती थी। दुख का कारण था मेरे प्रिय पुत्र का वियोग। जवान बेटे की असमय मृत्यु ने ज़िन्दगी को उथल-पुथल कर दिया था। हर समय पुत्र का मासूम चेहरा आँखों के सामने दिखाई देता था। भगवान में आस्था टूट गई थी इसलिए मंदिर जाना, भजन-कीर्तन सुनना सब मैंने बंद कर दिया था। मन की शान्ति की खोज में दर-दर भटक रही थी।

एक भाई ने मेरी दयनीय हालत देख प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित राजयोग शिविर का लाभ उठाने का सुझाव दिया परन्तु किसी का प्रवचन, भाषण या उपदेश सुनना मुझे पसन्द नहीं था। इसलिए शिविर में जाने से मैंने मना कर दिया लेकिन वह भाई मुझे मनाकर शिविर में ले गया। शिविर में रोज़ सुबह मुझे जीवन के बारे में समझाया गया। सात दिन का कोर्स पूरा होने के बाद मैं मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनने लगी। धीरे-धीरे मुझमें परिवर्तन आ गया। ईश्वरीय मधुरवाणी सुनकर बार-बार सुनने की इच्छा जागृत हो गई। श्रीमत प्रमाण मैंने परमपिता शिवबाबा पर अपना दुख-दर्द समर्पित कर दिया।

बाबा के आशीर्वाद से मुझे शांतिवन जाने का सौभाग्य भी मिल गया। उस पावन नगरी का स्वच्छ, शांत, मोहक वातावरण देख मैंने मन ही मन बाबा को कोटि-कोटि प्रणाम अर्पित किए। प्रतिदिन के मधुर स्नेहयुक्त उपदेश सुनकर मैं अपने पहाड़ जैसे दुख को भूल गई। उस वातावरण में घर, प्रिय पुत्र के वियोग आदि से मैं उपराम हो गई। उस पावन नगरी के ईश्वरीय वातावरण में मन निहाल हो गया। शिविर की अवधि पूरी होने के बाद न चाहते भी वापस आ गई। मधुबन से लौटने के बाद मुझमें बहुत परिवर्तन आ गया।

जब-जब पुत्र का वियोग मुझे सताता, उस समय मैं बाबा को स्मरण करने लगी। तब बाबा के दिव्य मुखमंडल की तेजस्वरूप मुस्कान से मुझे सांत्वना मिलने लगी। **जिस प्रकार धान के खेत से अवांछित पौधों को उखाड़ दिया जाता है, उसी प्रकार ईश्वरीय उपदेश ने मेरे मन की पीड़ा को उखाड़कर फेंक दिया। ज्ञानामृत के रसास्वादन की मधुर अनुभूति के सौभाग्य से मेरा मन शांत हो गया।** पुत्र की याद से आने वाली उदासी की जगह मानस में शिवबाबा की मधुर

स्मृति बसने लगी। अब मैं दुखी नहीं हूँ। मैं अतीत को भूलकर वर्तमान में जीने लगी हूँ। मेरा जीवन धन्य हो गया है। जब भी उदास हो जाती हूँ, बाबा का स्मरण करती हूँ। मुझे एहसास होता है कि बाबा बड़े प्यार से सिर पर हाथ रखकर मुझे तसल्ली दे रहे हैं।

ईश्वरीय सेवा के निमित्त दादियों, दीदियों और भाइयों के प्रवचनों से मेरा मन हमेशा प्रसन्न रहता है। उन देवियों का सेवाभाव, त्याग की भावना, बाबा पर अटूट विश्वास सब मेरे लिए प्रेरणादायक हैं। ठीक ही तो कहते हैं, 'जीना है तो रोते-रोते जीने से अच्छा है, हँसते-हँसते सबको सुख देते हुए जीओ।' शिवबाबा और इन निःस्वार्थ कर्मठ भाई-बहनों ने मेरी ज़िन्दगी का काया-पलट कर दिया इसलिए मैं बाबा तथा भाई-बहनों को कोटि-कोटि प्रणाम करती हूँ। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org